

89

WILLIAM HOLLIS

समं ह्यी कन नमधार्त्तन तितिवददेष्या नक सलु सैरु के
उनमह्यी रुसयं नूयमदध्व नायनमैरुही दानक
नूयनविश्वकूटक सैरु यतुसिद्धिनिष्पन्नकानन
नन्दनादयिसूचनं वकूलेकूलेवककाकनदवक वंय
कादिरिसारिगं कासका ठकियाठ वागु ननागका मलवा
गितं ॥ यथि मालनिकूहु कूकममधू नमधू कवि

युग न भद्रलुपमधू न

काभिगं नन्नि कागितकमल दामनयाति जातसमाकूलं वि
विषमो नरमि नतमा नगकि च कंधनियूलिगं मकनदया
नविषमधूक नगुजितं दुसमलुगं २ ॥ लेकूचताल
पलासकिंशु का कालू का नविशुषिगं सनससा नकै नववक
वन्दननाजितं अगनगु पुनगनस रूखदिनगिभियसा

x ससान २

निकर्कं विमनगनगानं

शितं दलितं द्यादिमरुतसना नंगविजयलिकयनेतं ॥ ३
 ॥ कदलिवदलीकम्बखड्ग न द्यक्रयापिचसोहितं नालिकतक
 पितृथीरुलक्रीनिकादिनितावृत्तं विल्ववौ नक नंवव्वनम
 दनकलुकितापितं जीववधूक दीनतं द नमिलिलितनल
 नापितं ॥ ७ ॥ गुरुवत्सनाजमालुविधम्मभालुसमूहवत् ॥

ददत्त वरुक्तक मकुर्ग

साकसिंहमनिद्रुवन्दिगमनुमायषउकनं चन्द्रकाटिस
 गीतलद्विगिस्वर्गकाटिसमयर्ग गन्तमामियनात्यनयन
 गुरुधाममयाविजु ॥ ८ ॥ सुलभूषाविद्रुनद्रुनकखव्व
 दीर्घविधायक यक्रवक्रमन्युदानवमिद्धिसाधमसावि
 तं कलुकावलयायमरुलनूपिनं जनयालितं गन्तमामि

दायलवधुवावककनिदा

मामि॥ १० ॥ त्रिगुणसंख्यं व न कृत्वा किं त उच्यते मायाम
 मन्त्रकं त्रिगुणकानवका न ह्येक मायिनं गतमायि
 नं ॥ अदिमध्यमक्रान्तवर्ति तभा क्रकानवनिर्मलं तत्र
 मामि॥ ११ ॥ नागवर्गिमसंगवर्ति तर्ह्यंगिमादिकवर्ति
 तं नागवर्गिमसंगकानवर्ह्यंगिमादिककानवर्ह्यं हंसवाह

त्रिगुणसंख्यं
 व न कृत्वा किं त
 उच्यते मायाम

॥ यच्च दशनदकटकिं तस्य द्विकादिका काननात् अस्मिन्नास्ति यमस्ववचने
 नयाकासासनयन्त्रगसनराविर्तं तन्न मामि॥ १३ ॥ कुमि
 जीवनोसुयासनगन्धवाहनवर्ति तं ध्यामवर्ति तस्यैव का
 नवत्रययन्त्रविवर्ति तं ॥ कुकिं मुक्तिं दत्तेष्वकावला नाम ध्या
 मविनिर्ज्ञतं तन्न मामि॥ १४ ॥ लोवसौ गतसाकदेष्टु
 वसौ नदगते कानवर्ह्यं सद्यकावला कानवर्ह्यं काननात्
 धस्य नायिवमाहनान् ॥ नृपशुद्धनिद्रयस्यैव गसहिदामेयं विदुः ॥ १५

क नूयिनं वृद्धं सवयौ वनान् क वालकादिक संश्वं तं नमामि

॥ १३ ॥ नया लया लयता यमल विनिर्मितं कि नमकुतं शुभम्

रुममूक नक दसंयुतं गुणवद्धनं विविधसिद्धिनिधानं गजान

मूकमं मुख दायकं आ क माद विना ग का नममूक मूकिय दगिर्व

॥ १४ ॥ नरसिमासि विभायया अलि मूक मा ग विनेयकं य०

X ॥ नया लसमपतस्मिन् स्वमनिगिनिशतं ग्राव नमुकय क गुह वा लयेति यदि

अतिथाद जायस यू० सुगमाया धर्मधनु यमिय न विमलप्रीति कामेय

मियदि मुविमान व० अतिवास नं रुल दायकं विरु नूययगं

४ य दायक स्वप्न सो स्वा मयु पुदं का ग क द र ग द ना नूचिय मूक

वा धिरु ए न तं ॥ १५ ॥ ०० ति श्री श्री युता यमल नूय विनचितं

स्वयं गु र दान कस्तु तस माय ॥ ७ ॥ ११ श्री शिव नूया यरी

ममनाय नमः ॥ १२ यवन जमी दरी मवर्न अनसु नमिवत

X जना मनुषी नमय ता यमिति यमिति ल के निमित्तं कुत नाजं ॥ १३ ॥

नलीतिद्वयं ॥ **ध्रुव** ॥ चिकुलचामलचानूचकलचूचिताचल
चलमस्रकां धनविधननधुनीधननधितधमधूननकोनकां
दधयुनितदेहदानवद्वितदावकावकां ननविस्मृतहातत
नलनकूनतायगायिततावकां ॥ १ ॥ कयटकोटिकयाटयाटन
यकातहातकनयाटवं लीमदे नूयरुयानकाननगमनजनित

महायजनवंवक्रिवासववनूहसूनवपूर्वादितावनदायकां यो
रुदंवादिधिषदिंसनवदलकेलवलतायकां ॥ २ ॥ लीमवेक
मधगरां कितवियूलविष्कूलकाननं यादद्यातविदावितावर
निगमननलजनकायननचचवीकसूचोनूचीगिमनयनयूमम
भावमं मानिनीजनमानभाचननूचिननूचिमदनायमं ॥ ३ ॥

लोहकाष्ठककाटिसंकाटललितनदितगदाधनं नम्यनंकुसू
 मृदिकाभृत्तिलसितसुनसिजसुत्कनं काकिलाकलनादयूनि
 तविमिनक्षतसूविहानकां डोयदीमुखवद्धदीधितिमृदित
 हृदयजकावकां ७ ॥ कीचकानूजदहदावहमगधन
 मवप्रकानर्हदूख यंकनिममहादनविविधविधिह

७

ततानर्गनविक्रमाहृतलूहमयूकानधनदधनकसुजा नूहंसि
 धूनाजसिभानूहावतिकवतमनूजरुयावहं ८ ॥ नम्यनू
 कविनिमिगामेत्तवसनेतिवसुनसूचनं दहसदूयतिदूवनि
 क्कितविखमगिनिववमंदनं धाववहमनतखनकावनहि
 हतकनूववशादनं तद्धनानूधिवमदिनामानयानैवह

तल्यनं ७ ॥ दूहकर्मसूत्रैर्मन्त्रेभ्यश्च नमो कनन वयतिभावनं
दीपित्वमसूत्रैर्मन्त्रेभ्यश्च नमो कनन वयतिभावनं
मानगंजननिमित्तनिजगनतावकं द्योयदीकचरा न कषेष्टम्
वितकूचयति यावकं ॥ १ ॥ रिजं दकविमलियिवलय
मसिद्धिददेवतं जुजगनूतिदगवा दूहसूत्रलिगवानवदनवि

नाजितं वीचकिमिभै नविजयताषितनिमित्तमादनमानसं
दहनकाचनजनय भावन द्योयदीकचरा न कषेष्टम् ॥ ८ ॥ नी
लयकजवासराहितविमलकनवनक्षानिदी वामजानूसदास
नालूयमध्वसाधुनिवासिनी नक्षत्रयंगमदस्त्रिजलसदक
सुखगनरागिनी द्योयदीमतिस्त्रिमासवविविधसुखचयद

यिनीं ॥ ९ ॥ शूतनाथयिगाविका क नमूदिगद्वदयस्सवि
तं यश्च वधूस्सुमेनुसदका सुकलमूनिगत्य सावितं न कृतयाल
कामा तथा गिनिगतययनिवृत्तका र्वाका द्यधिकारिं गच्छुकि
मलि तैलवसतिवतिवससावकां ॥ १० ॥ शुक्ल ददद्वचम
संगममेयल यघन जयसीति द् सी मदनरु यानकानन नूधि

कावे

नदायक शमोदु शूतनाथमहावलं
दीपिचमसुक्कु लुतवित्तकिलकिलयूकलं ॥ ११ ॥ शुक्ल
धसुधा जगन्वचनचला नूचिनाचिनीं पृथ्वीवित्तकिलक
कानिगितनखनदना गिनीयदहमानविलं विताचल नमलन
तिनसहासिनीं चिन्तयामि यिगाचिनी मयियलल क नयुगल



सिनी°
नीवी° ॥ १२ ॥ यत्तु गजसंयुतं यद्वदववसति यदि जनदसुका
कां० मसुकासुक्तिं वनयुवतिजनकन वामक ॥ दूरे संपन्नसं
कदा दायिरुजतिजयचयनिर्मितं अर्थसारमनूकलीकित
सकलधनयतिमूलं ॥ १३ ॥ श्रीकवीन्द्रप्रतापमहाराज
ननयतिनिर्मितं श्रीमन्नसूक्तं वीकिलवसुधुवद्वि

सक्तं रंदा वसं कठो न जल रुय विविध दूज सुखा वदं ता
 न कं गुह दायकं खलु निखिल मन जं या यदं ॥ १५ ॥
 तिथी मदा ना जा धि ना ज श्री श्री कवी दुष्ट ना समनु दवा वि
 नचितं श्री शिव नूय श्री मसन सा गु समाय ॥ ७ ॥ ७ ॥
 हं नमः श्री श्री मसना या श्री श्री मसना मदा काय सव कामरु

लुपदं शिष्टि नान रु कीरि कोतियु कयिध रु कि रु का
 निमदा सु श्री मसना दित न तं रु दू र्मा गिया रु रु रु रु रु रु
 धन निवान क पूसा मन या दं ता दानू र्मा म न द न द सो ग
 धि का द न का शि रु ना र्मा धि र्मा रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
 वायू रु

क्रांस्वमुष्ण दयुष्ण धीमान् वायुजान् दत्यतिष्ठिथ ॥ याता नय
 नगामी च दूरे नयागद्या न क ॥ म न ऊरुस्वनदा नीगन्ध द्यो
 गममद्वेन ॥ वसुदवयीथा रोगी वासुदेवसदाप्रिय ॥ कन
 वंश क्रय कला मला यत गङ्ग समक्षा दताम नाना धर्म धामि
 का धामि काप्रिय नका देगी तीर्थ कला सद्वन संकय प्रिय मनि

(४)

वंश समुद्र नं श्रीम वंशयतिष्ठि न वासप्रियथामास शक्ति राज
 तीरावनाशक १ ॥ जनासंक्षमभा जी धा गदायुद्ध विमान द
 यांचालीयाण कलाय यावनयनमानूज यानावा न विहावी
 च यविलज्जन वक्रक विखरु रुगास्तदि दिवगावकादम
 वदुग्धानुदीराका विनाददवलीश्वरी खनखा शयीथाधी

रूपेणोपायनादहं यीतामनस्योऽनं अथमथमकलासव
श्रीमद्विमावदः अक्षरं न जतं दिव्यं नामाभतत्पतावदं या
तस्मात्सवि रुचा मधुमन्त्रतयनं ॥ त्रिकात्रितयसयापी स
वसिद्धिरुवत्यमानः ॥ रूपाक्षरं ॥ त्रिकात्रितयसयापी स
नयनरुदि ॥ मरुयन्तं रुवत्यस्मिन् त्रिकात्रितयसयापी स

अथम्यां चक्रं यूप्यो नवम्यां गुकुरुमनो ॥ तस्मात्पागुरुवसिद्धि
संकास्यां च विमयतः ॥ यूप्यत्स्ययं रुकुरुमनो कुरुगं नीलतातकं
॥ वा नृणां दिधिमुखं सुयविष्टसदासुखी ॥ कयुलकं कमयैव
॥ गभाचनागुनंततः ॥ चन्द्रनाभकयुगैव सिताक्षुभमृगं मृन
॥ ७ ॥ अथवाकनवीवं च नागचंयकयावकै ॥ नयमक

कशीकृत्वा नगथानीयतिष्ठित ॥ नामक्षारु प्रहतां देवां यत्य ०
प्रात नंदुचि ॥ तस्य तत्क्रीरु वनित्यं ॥ शुक्लाय रुडाडि रुधा ॥ विष्णु
षकलियूग ॥ वायूयुग सवयुक्तां ॥ कनिग रुयायु रुद्रं ॥ रुद्र तीन
तयावन ॥ गंदका रुत नद ॥ निनं कथ वविद ॥ ग ॥ न ॥ रुद्र
वेराएव ॥ जावत् चक्षुषा वधि ॥ तीर्थ चूडामणि लिंग म ० १

वासेन वधु न ॥ लिंग त्वं चाष्ट का ॥ तया नयू वला गत ॥ चंठ
चंठ ॥ नामात्म लिंग म ॥ कय प्रतिष्ठित ॥ लीम रुद्रां मिदं या कं सर्व
तीर्थ समं धितं ॥ यत्य ० मान वनित्यं ॥ तस्य रुत विना दितिः ॥
चन्द मुखं वतु वद ॥ मर्थवा करियन ॥ साग बाह्य संतुल्यं ॥ य
धीन रुद्रं स्वया ॥ गगन रुद्र संख्या ॥ यत्तं रुद्र संख्या ॥ सा

सभककमनेव य० चसच्चदाकमा । मदनायमददस्य नोथा
 वनजायतयमात् ॥ द्विमासय० धीमात् गृहं देममयी रुवत् ।
 हृतीयमासय० न सरु जामतुलागियं ॥ वं धूरायमृतराग्य
 चतुथमासयाथकनयचममाससंतानं षष्ठवेनयुनाडाकांम
 यमवियलांत श्री अक्षमधमोविरुवं । नेवमसर्वसामान्यं दश

५

मसिद्धिनसंमय० कादलाभनकामात् चतुवर्गतालकन । श्री
 मसेनवंथासदं ऊकआतिप्रमादतः ॥ तस्ययूनगतिनास्ति ला ६
 कलाकयूगयूगमादनादिषिसिद्धिं व रुवत् रंमयमादतः
 ॥ ३८ ॥ मतिधीवक्रजामलनेलवकल्य श्रीदवक्रमानमं
 वादसीमप्रतागतनामगतसमायु० ॥ ६ ॥ शुननवत् ॥

२३ गुणसक श्री श्री मदाया विना कितम्ब नाय नमः ॥ विम्विद
 मन्त्रविनिर्जित द्रुक् कल वल विना जि सट नम नयति भीति ना
 जितया दयं कज द ॥ सदा दस्त नल सुम नसिज मश यति मल
 जात मनसिज विविद्ध मतिग नदह मधुल दूति नखं ठ नद
 ॥ १ ॥ जलिल मोल्या मिता रुध नव

२३
 २३ नमः ॥ वन्द्य त्वामा नंद नवे विन नलित ॥ ५ ॥ नंद
 नवन गत ॥ रामय द माह निवद की ठ नम सुख द ॥ व
 नथा गिनी विद्या य निविदिन नूय दिय विम नम नगदित ॥
 १ ॥ विष्णु यदी तट य द्वात क नित रुदन दी जल संग म कलि
 न ॥ सुनयो दय गत ॥ राम मिति न ॥ अगि काटि गते ना क
 नि

लि॥ २ ॥ कत्रविनालिभयिहवनमध्वनलकूटमन्दित्रम
मिनद्धः। नस्मिन्त्वमिहविनाकसिग्नवत्। नित्यकालसाध
करयहवत्॥ ४ ॥ विनामहिनिमित्तवलवलय गिनि
वलमध्वसदाकृतनित्य। वातदिवाकलसमवृत्तिललि
न सहजानन्दवृत्तगुणवन्ति॥ ७ ॥ तस्मिन्वावृत्तिवृत्त

वयनम्। खलितदनूजदयावसमम्। स्मवददनभामां
नित्यदक्षसाधकजनयुक्टीकृतस्त्रद॥ ९ ॥ प्रवृत्तवा
मकत्रवकरे गुहालावनयायिजनविमुख। कर्मलकूम
विनिमित्तमालमधुमालवमनीयविमल॥ ७ ॥ नकया
नमादितवलनयने। उद्धयादतर्जितकृतगुवन। सिद्धन